

**B.Ed – 2<sup>nd</sup> Year**

**Pedagogy of Biological Science**

**Course- 7 (b)**

**Lecture - 39**

**Nakul Sah**

**Assistant Professor**

## **समस्या समाधान विधि**

यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य अनुसंधान प्रणाली से सम्बन्ध रखता है। अनुसंधान प्रणाली में समस्या के समाधान का प्रयास किया जाता है। इस विधि में समस्या को पहचानने से लेकर उसके समाधान तक चलना पड़ता है। क्रमबद्ध तरीके से पूरी विधि को पूर्ण करना ही इसका उद्देश्य है। वैज्ञानिक विधि के अन्तर्गत रिफ्लेक्टिव सोच एवं आलोचनात्मक चिन्तन का विद्यार्थियों में विकास होता है।

### **समस्या समाधान विधि के पद :**

जॉन डिवी ने इस विधि को पदों के क्रम में बताया है। वह इस प्रकार हैं -

#### **1. समस्या को पहचानना एवं परिभाषित करना :**

विद्यार्थियों के सामने ऐसी स्थिति कई बार आती है जब वह अपना कौशल और ज्ञान का उपयोग समस्या को हल करने के लिए करते हैं। समस्या की जड़े रोज़-मर्रा की जिन्दगी अथवा

पाठ्य-वस्तु से सम्बन्धित जहाँ भी विद्यार्थी को अनुभव हो वहाँ से समस्या को चुन सकता है। विज्ञान शिक्षण में पाठ्य वस्तु से उन ही प्रकरणों का चयन करना होगा जो समस्या समाधान विधि द्वारा हल किए जा सकते हो और अधिक जटिल न हो, क्योंकि यह सत्य है कि सभी प्रकरण समस्या-समाधान विधि द्वारा नहीं पढ़ाए जा सकते एवं समस्याएं इस विधि द्वारा हल नहीं की जा सकती।

समस्या को विद्यार्थियों द्वारा समझने के लिए पर्याप्त समय देना चाहिए। समस्या को भलिभाँति पहचानने के बाद विद्यार्थी उस समस्या को जो समझता है उसे सटीक और सरल शब्दों में परिभाषित कर सके। यदि विद्यार्थी समस्या को सटीक, विशिष्ट और साफ भाषा में परिभाषित कर पाता है तो यह मान लेना गलत नहीं होगा कि अब वह समस्या के हल तक भी पहुँच जाएगा। समस्या के परिभाषितीकरण में कुछ विशिष्ट या कुंजी (की-वर्ड्स) शब्द होते हैं जो समस्या को उत्तम तरीके से समझने में मदद करते हैं। शिक्षक को भी छात्रों को समस्या के परिभाषिकरण में सहायता प्रदान करनी चाहिए। विद्यार्थी समस्या के परिभाषीकरण को कक्षा में विचार-विमर्श कर भी सटीक कर सकते हैं।

To be continued.....